ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - VII Issue - IV October - December - 2018

Marathi / Hindi Part - III

Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal

Journal No. 40776

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖

Asslt. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Math's), M.B.A. (Mkt), M.B.A (H.R),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod & Dirt), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

VOLUME - VII, ISSUE - IV - OCTOBER - DECEMBER - 2018
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 5.5 (www.sjifactor.com)

CONTENTS OF HINDI PART - III

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१	हिंदी कहानी में संविधानिक मूल्य **डॉ. मिलिंद बनकर**	१-४
२	कबीर के साहित्य में समरसता भाव **अनिल पुत्र श्री गोविन्द राम**	५-९
३	समकालीन हिंदी कविता में दलित विमर्ष (समकालीन हिंदी कविता की पृष्ठभुमि के परिप्रेक्ष्य में जयप्रकाश कर्दम का साहित्य) **प्रा. डॉ. अश्विनीकुमार नामदेवराव चिंचोलीकर**	१०-१३
४	नाट्यालेख एवं रंग कर्म : नाट्यालोचन दृष्टि **डॉ. प्रकाश कृष्णा कोपार्डे**	१४-१८
५	'गुजर क्यों नहीं जाता' में महानगरीय जीवन **डॉ. राजेंद्रसिंह चौहाण**	१९-२२
६	साकेत में नारी चित्रण **डॉ. ललिता राठोड** **डॉ. गोरख काकडे**	२३-२६

VOLUME - VII, ISSUE - IV - OCTOBER - DECEMBER - 2018
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 -IMPACT FACTOR - 5.5 (www.sjifactor.com)

६. साकेत में नारी चित्रण

डॉ. ललिता राठोड
सहयोगी प्राध्यापक, बलभीम महाविद्यालय, बीड ।
डॉ. गोरख काकडे
सहायक प्राध्यापक, सरस्वती भुवन महाविद्यालय, औरंगाबाद ।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त हिंदी साहित्य में द्विवेदी युग के नाम से अभिहित किए जानेवाले काल के प्रतिनिधि कवि हैं। उनके साहित्य में राष्ट्रीय भावना, देश प्रेम, अतित गौरव, सांस्कृतिक गरिमा, भारतीय सभ्यता एवं उदात्त नारी भावना का विशद चित्रण हुआ है। उन्होंने नारी महत्ता को लेकर महाकाव्य, खण्डकाव्य, चम्पुकाव्य एवं मुक्तक काव्य लिखे हैं। उनकी नारी महत्ता संबंधी लिखी कृतियां – 'साकेत', 'विष्णुप्रिया', 'शकुन्तला', 'यशोदरा', 'पत्रावली' आदि।

गुप्तजी ने 'साकेत' महाकाव्य में वियोगीनी उर्मिला का, मातृभाव की प्रबलता से युक्त कैकेयी का, 'द्वापर' में विधृता नायिका विष्णुप्रिया का बड़ा सशक्त चित्रण किया है।

रीतिकाल में जो नारी का चित्रण भोग का साधन के रुप में किया है, इसे परिवर्तित करने का काम मैथिलीशरण गुप्तजी ने किया है। रीतिकालीन नारी की दशा स्पष्ट करते हुए डॉ.नगेंद्र द्वारा संपादित 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में लिखा है, "नारी को अपनी सम्पति मानकर ही उसका भोग इनके जीवन का मूल मन्त्र हो गया था। विलास के उपकरणों की खोज और उनका संग्रह तथा सुरा–सुंदरी की आराधना अभिजात वर्ग का शगल था और मध्य तथा निम्न वर्ग के लोगों में उसका बोलबाला उसके अनुकरण के कारण था। किसी की कन्या का अपहरण अभिजात वर्ग के लोगों के लिए साधारण बात थी।" जिस युग में नारी की यह दशा हो उस युग के साहित्य में चित्रित होने वाली नारी भी कोई महान, आदर्श या त्यागमयी जीवन जीने वाली नारी नहीं हो सकती, क्योंकि साहित्य अपने युग का प्रतितिधि होता है।

आधुनिक युग में नारी के प्रति दृष्टिकोण में बदलाव आया। भारतेंदु युग में श्रृंगारिकता की प्रवृत्ति तो चलती रही पर नारी को केवल भोग की वस्तु न मानकर उसे मान–सन्मान भी दिया जाने लगा। इस काल में बाल–विवाह, सती–प्रथा आदि प्रथाओं का विरोध होता रहा। फिर भी नारी के प्रति दृष्टिकोण उदार न बन सका। भारतेंदु भले ही मद्यपान की निन्दा करते हो पर स्वयं धीरे–धीरे वे भी उसके आदि हो गये थे। मल्लिका नाम की बंगालीन को रखना इनकी विलासिनता का परिचायक है। फिर भी भारतेंदु ने एवं उनके युग के प्रतिनिधि कवियों ने नारी चित्रण संयमित रहकर किया है। श्री.ति.रा.शर्मा के 'विवेचनात्मक इतिहास' के अनुसार, "श्रृंगार का विशुध्द रसत्व और रसराजत्व ही वहां रुपायित हुआ है मांसल श्रृंगारिकता यहां नहीं मिलती। वियोग श्रृंगार का एक उदाहरण देखिए–

"सखी ये नैना बहुत बुरे
तब सो भए पराये, हरि सो जब सों जाई जुरे।"